नागरिक प्रतिरोध की सफलता के तीन गुण : एकता, नियोजन और अनुशासन

THE TRIFECTA OF CIVIL RESISTANCE: UNITY, PLANNING, DISCIPLINE

TRANSLATOR’S NOTES

नागरिक प्रतिरोध की सफलता के तीन गुण :
एकता, नियोजन और अनुशासन

opendemocracy.net /hardymerriman/trifectaofcivilresistanceunityplanningdiscipline

- हार्डी मेर्रीमैन

सम्पूर्ण विश्व में अहिंसात्मक प्रतिरोधों की गुणात्मक सफलता और असफलता के अंतर को एकता, नियोजन और अहिंसात्मक अनुशासन के बुनियाद पर समझा जा सकता है।

एक अहिंसात्मक नागरिक प्रतिरोध को कैसे प्रभावी बनाया जा सकता है ?

"शक्ति दी नहीं जाती बल्कि यह हासिल की जाती है" यदि हम राजनीति के इस स्वयंसिद्ध विचार को मानते हैं, तो अनिवार्य रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि ऐतिहासिक अहिंसात्मक अभियान सफल रहे क्योंकि - किसी न किसी तरह उसने अपने प्रतिरोधियों की तुलना में अधिक शक्ति अर्जित की।

यह निष्कर्ष विरोधाभासी रूप से कुछ सवालों के साथ उस अवधारणा तक पहुँचाती है, जिसके अनुसार - शक्ति, भौतिक संसाधनों के संयोजन तथा नियंत्रण और उसके आधार पर हिंसा करने की क्षमता से पैदा होती है। यदि ऐसी अवधारणायें पूरी तरह सत्य हों तो समस्त अहिंसात्मक आंदोलनों को सशस्त्र और संसाधनों से युक्त शक्ति के आगे पूरी तरह पराजित हो जाना चाहिये था। लेकिन इतिहास और उसके घटनाक्रम हमें अनेक सफल अहिंसात्मक आंदोलनों के बारे में बताते हैं जो एक शताब्दी से अधिक के समयकाल तक विस्तारित हैं। जहाँ अनेक नायक हैं और जो मानवता के बहुआयामी पक्षों की तरह विविधताओं से पूर्ण है। ऐसे कुछ उदाहरण हैं :

- 1930 और 1940 के दशक में भारतीयों ने व्यापक असहयोग आंदोलनों (आर्थिक बहिष्कार, शैक्षणिक बहिष्कार, कर नाफरमानी, हड़ताल, अवज्ञा और त्यागपत्र) को उन सीमाओं तक ले गये जहाँ ब्रितानिया हुकूमत को यह स्वीकार करना पड़ा कि वे भारत पर शासन करने योग्य नहीं हैं और उन्हें वापस लौट जाना चाहिये
- 1950 और 1960 के दशक में संयुक्त राष्ट्र के जनअधिकार आंदोलनों नें अनेक अहिंसात्मक अभियानों के माध्यम से 'समानता का अधिकार' हासिल किया। मांटगुमरी बस बहिष्कार, नैशविले का धरना आदि के माध्यम से संस्थागत भेदभावपूर्ण व्यवस्था को उजागर करते हुये ये आंदोलन राष्ट्रव्यापी समर्थकों को आकर्षित करने मे सफल रहे

- 1965 से 1970 के दौरान कैलिफ़ोर्निया ग्रेप विनयर्ड्स के ख़िलाफ़ एक स्थानीय संगठन 'यूनाइटेड फार्म वर्कर्स' के अहिंसात्मक हड़ताल और बहिष्कार ने राष्ट्रीय स्तर पर जन समर्थन हासिल किया
- वर्ष 1986 में फिलीपीन्स में अमेरिका समर्थित तत्कालीन तानाशाह फर्डिनांड मार्कोस के विरुद्ध सेना के दलबदलुओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के गठबंधन नें महत्वपूर्ण सफलता हासिल की - जब बढ़ते हु ये अहिंसात्मक प्रतिरोध को देखते हु ये मार्कोस देश छोड़कर भाग गये
- वर्ष 1988 में चिली देश के नागरिकों के सशक्त अहिंसात्मक प्रतिरोध ने तत्कालीन तानाशाह अगास्तो पिनोचेट के हिंसात्मक दमन के विरुद्ध देशव्यापी अभियान खड़ा कर दिया था। इस प्रतिरोध नें अगास्तो जैसे हिंसक तानाशाह को भी इतना कमजोर साबित कर दिया कि वफ़ादार सैन्य बलों ने उनका साथ देने से इन्कार कर दिया
- वर्ष 1980-1989 के दौरान पोलैंड के लोगों ने सॉलिडेरिटी आंदोलन द्वारा एक स्वायत्त ट्रेड यूनियन का गठन करते हु ये उसे सोवियत शासन से अलग कर लिया
- वर्ष 1989 में वेलवेट क्रांति के नाम से प्रसिद्ध शांतिपूर्ण प्रतिरोध और हड़तालों ने चेकोस्लोवाकिया को साम्यवादी तंत्र से अलग कर लिया। इसी तरह शांतिपूर्ण संक्रमण पूर्वी जर्मनी, लातविया, लिथुएनिआ और एस्तोनिया में 1991 में हु आ
- 1980 के दशक में दक्षिण अफ्रीका में जनसमर्थित अहिंसात्मक बहिष्कार, हड़ताल, नागरिक नाफरमानी और बाहरी बंदिशों के चलते अंततः 1990 में रंगभेद की समाप्ति संभव हो सकी
- अहिंसात्मक प्रतिरोधों से ही सर्बिआ (2000), जॉर्जिया (2003) और यूक्रेन (2004) में कपटतापूर्ण संचालित और घोषित चुनाव परिणामों के विरुद्ध निरंकुश सत्ता को लोगों ने बेदखल कर दिया
- वर्ष 2005 में लेबनान के लोगों के व्यापक अहिंसात्मक प्रदर्शनों के असर से सीरिया के सैन्य बलों को अधिपत्य से पीछे हटना पड़ा
- वर्ष 2006 में नेपाल के लोगों के राष्ट्रव्यापी अहिंसात्मक जनप्रतिरोध ने जनतंत्र को पुनर्स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया
- वर्ष 2007-2009 के दौरान पाकिस्तान में हिंसात्मक बग़ावत के मध्य वक़ीलों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और जनता के स्वतःस्फूर्त अभियान ने आपातकाल के विरुद्ध एक स्वायत्त न्यायालय की व्यवस्था को सफलतापूर्वक बचाया

यदि लोग हुक़्म मानने से इनकार कर दें तो हुक़्मरान शासन नहीं कर सकते

दुनिया के जन प्रतिरोधों पर आधारित तमाम आंदोलन इसलिये सफल रहे क्योँकि वे 'शक्ति' के गहन दृष्टि पर आधारित रहे हैं। सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत संस्थान और संगठन - बनती हुई सहमतियों, सहयोग और व्यापक जनसमूह के आज्ञाकारिता पर निर्भर हैं। इसीलिये यदि जनसमुदाय रणनीतिक तरीके से अपनी सहमतियों और सहयोग को समाप्त करता है तो एक प्रतिरोधी जनशक्ति मज़बूत हो जाती है । यदि यह प्रतिरोधी जनशक्ति आज्ञा मानने से इनकार कर दें तो राष्ट्राध्यक्ष, मेयर, कार्यकारी अधिकारी, सेनाध्यक्ष और अन्य 'शक्ति के केंद्र' निरंकुश तरीके से शासन कर ही नहीं सकते।

अहिंसात्मक कार्यनीति जैसे हड़ताल, बहिष्कार, जन प्रदर्शन, अवज्ञा, समानांतर संस्थानों की स्थापना और असंख्य तरीके से होने वाली रचनात्मक गतिविधियाँ दुनिया भर में उपयोग मे लायी जाती रही हैं। यह जरूरी नहीं कि हर बार नैतिक आधार पर इन तरीकों को आजमाया जाये, बल्कि इनका चुनाव व्यवहारिकता के आधार पर भी होता है। जन प्रतिरोध के उपयुक्त तरीकों का चुनाव वहां के इतिहास और उपलब्ध तरीकों की जन स्वीकार्यता पर भी निर्भर करता है।

दक्षता और परिस्थितियाँ

इन प्रेरणाप्रद अहिंसात्मक आंदोलनों की सफलताओं के मध्य, इतिहास और समकालीन दुनिया में अनेक अनिर्णीत और परास्त आंदोलनों के उदाहरण भी हैं। जिन बरसों में दुनिया ने पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया का सफल अहिंसात्मक आंदोलन देखा उसी समय चीन के तियानमेन में हुये नरसंहार के भी हम साक्षी हैं। पिछले दशक मे बर्मा, जिम्बाब्वे, मिस्र और ईरान में बहुसंख्य लोगों ने अहिंसात्मक युक्तियों का प्रयोग भी किया किन्तु सफलता के मुक़ाम तक नहीं पहुँच पाये। पूर्वी तिमोर में हुये स्वनिर्णय का सफल आंदोलन अपरिहार्य था। लेकिन स्वनिर्णय के ऐसे ही आंदोलन फिलिस्तीन, पश्चिमी पापुआ, पश्चिमी सहारा और तिब्बत में अब तक सफलता से दूर ही हैं।

आखिर इनमें और दूसरे आंदोलनों मे क्या भेद हैं ?

तर्कशील और पूर्ण जानकार व्यक्ति इन आंदोलनों की सफलताओं और असफलताओं के संबंध में सहमत अथवा असहमत हो सकते हैं {1}। हरेक परिस्थिति की अपनी जटिलतायें हैं जो आंदोलन की कारणता के

चुनाव को निर्धारित करती है। एक तर्क जो अक्सर मैं शोधार्थियों और पत्रकारों से सुनता हूँ वो यह कि इन चर्चित और ज्ञात अहिंसात्मक आंदोलनों का प्रक्षेप पथ और सफलतायें मुख्यतया संरचनाओं और उन अपवादपूर्ण हालातों पर निर्भर होती हैं जिनसे जनांदोलन जनमता है।

उदाहरण के लिये यह तर्क दिये जाते हैं कि अहिंसात्मक आंदोलन समाज में तभी सफल होते हैं जब दमनकारी, घातक शक्तियों का प्रयोग नहीं करते। दूसरे यह दावा करते हैं कि आर्थिक मानदंड (जैसे आर्थिक विचारधारा, आय का स्तर, सम्पदा का वितरण, मध्यमवर्ग की उपस्थिति) और शैक्षणिक स्तर वास्तव में सफल आंदोलनों के लिये अहम है। इसके अलावा कुछ लोग यह भी मानते हैं कि शक्तिशाली देश और क्षेत्रीय नायकत्व ही सफलता को निर्धारित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं। इनके साथ ही जातीय विविधता, राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास, जनसँख्या का अनुपात, भौगौलिक क्षेत्रफल आदि भी किसी परिस्थिति विशेष में आंदोलनों को प्रभावित करने वाले कारक हो सकते हैं।

संरचनात्मक और परिस्थिजन्य कारक वास्तव में वे कारक हैं जो विवादों के विरुद्ध उपयोग किया जाता है - जिन्हे शोधकर्त्ता 'एजेंसी' कहते हैं। दक्षता और एजेंसी वो निकाय हैं जिनके द्वारा आंदोलन का नियंत्रण होता है; आंदोलन किन रणनीतियों और कार्यवाही को चुनते है; लोगों को जागरूक करने और भागीदार बनाने के लिये किस भाषा का इस्तेमाल करते हैं; किस तरह गठबंधनों का निर्माण करते हैं; कहाँ और कैसे प्रतिपक्षियों को निशाना बनाते हैं - ऐसे असंख्य निर्णयों की समग्रता का निर्धारण उसी अनुसार किया जाता है।

मेरी दृष्टि मे दक्षता पर आधारित इन कारकों को अहिंसात्मक आंदोलनों के विश्लेषणकर्ता नज़रअंदाज़ करते रहे हैं। लेकिन ऐसा क्यों हुआ यह संभवतः इस आलेख के विषय क्षेत्र से परे है। फिर भी इसका एक महत्वपूर्ण कारण यह हो सकता है कि लोगों का संदेह हो अथवा वे अनभिज्ञ हों कि अहिंसात्मक आंदोलन का आधार क्या है - वास्तव मे सामूहिक व्यवहार के माध्यम से शक्ति के केंद्र को अपने पक्ष में बदल सकने वाले आंदोलनों को हम सफल अहिंसात्मक आंदोलन कह सकते हैं । इसके बजाय वे यह मान लेते हैं कि निश्चित रूप से बाहरी कारकों और परिस्थिति विशेष की वज़ह से यह अहिंसात्मक आंदोलन हुआ है।

बावज़ूद इसके, हम इस मत को स्वीकार करते हैं कि संरचनायें और परिस्थितियाँ अहिंसात्मक आंदोलनों के प्रक्षेपण पथ को प्रभावित करती हैं और उसके परिणाम एजेंसी और दक्षता के महत्त्व पर निर्भर होते हैं। एजेंसी और दक्षता एक अलग निकाय के रूप मे अहिंसात्मक आंदोलनों को इतना सशक्त करते हैं कि वो विपरीत परिस्थितियों को नाक़ाम करते हुये उसे अपने माकूल बना दे।

कभी कभी व्यवसाय और सैन्य शब्दावली मे भी एजेंसी और दक्षता को महत्वपूर्ण और अपरिहार्य ज्ञान के रूप मे स्वीकार किया जाता है। तब फिर अहिंसात्मक आंदोलन किन मायनों मे इनसे अलग है ? एक सैन्य अथवा एक व्यवसाय प्रमुख से यदि यह कहा जाये कि वांछित परिणामों को हासिल करने के लिये उनकी रणनीति कमज़ोर है तो वह उपहास का पात्र होगा। सुन जू लिखित 'युद्ध की कला' विख्यात नहीं होता यदि लोगों द्वारा यह मान लिया जाता कि विवादग्रस्त चर्चाओं का केंद्र बहुधा भौतिक संसाधन ही होते हैं। सारांश यह कि रणनीतिक विफ़लता का कारण मात्र भौतिक संसाधन है यह पूरी तरह सत्य नहीं और इसीलिये अहिंसात्मक आन्दोलनों में एजेंसी और दक्षता महत्वपूर्ण निकाय साबित हुये हैं।

एक बार हम फिर उस सवाल के उत्तर की तह तक पहुँचने की कोशिश करते हैं जिसे इस आलेख के प्रारंभ में पूछा गया कि - अहिंसात्मक आन्दोलन को प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है ? हम इस सवाल के जवाब तलाशने का क्रम इतिहास के उन आंदोलनों से शुरू कर सकते हैं जिन्होंने अहिंसा का एक रणनीतिक चुनाव करते हुये बेहतरीन प्रयोग किये। उनके पीछे निःसंदेह एजेंसी और दक्षता के भी महत्वपूर्ण कारक थे जिनका सफलता मे योगदान रहा। किन्तु यदि हम इसे सरलतम रूप में समझने की कोशिश करें तो हमारा निष्कर्ष हमे तीन गुणात्मक पहलुओं तक ले जायेगा जो - एकता, नियोजन और अहिंसात्मक अनुशासन ही होंगे।

एकता, नियोजन और अनुशासन

प्रथमदृष्टया इन गुणात्मक पहलुओं का महत्त्व स्वप्रमाणित है। यद्यपि इन गुणात्मक पहलुओं की गहराई और उसके व्यापक प्रभाव अनदेखे रह जाते हैं जब हम आंदोलनों का एक सामरिक और सतही विश्लेषण करते हैं। वास्तव में इनमे से हरेक का अपना महत्त्व होता है।

अहिंसात्मक आंदोलनों में एकता एक अहम पक्ष है, क्योंकि समाज के विविध वर्गों से होने वाली भागीदारी ही उसको सशक्त बनाती है। सामान्य रूप से भी संख्या आंदोलनों मे महत्वपूर्ण होती है। आंदोलन को जितने अधिक लोगों का समर्थन मिलता है उसकी ताकत, ज़िम्मेदारी और प्रदर्शनों की फ़ेहरिस्त उतनी ही व्यापक होती है। एक सफल आंदोलन इसलिये सतत रूप से अधिकाधिक लोगों तक पहुँचने की प्रक्रिया जारी रखता है - महिलाओं, पुरुषों, युवाओं, वयस्कों, बुजुर्गों, शहरवासियों, ग्रामीणों, अल्पसंख्यकों, धार्मिक संस्थानों से जुड़े लोगों, किसानों, मजदूरों, व्यवसाईयों, पेशेवरों, संपन्न वर्गों , मध्यमवर्गों, कमज़ोर तबक़ों, पुलिस, सैनिकों और अदालतों से जुड़े लोगों तथा अन्य समूहों आदि।

एक सफल आंदोलन इनके अलावा अपने प्रतिपक्षियों तक भी सतत रूप से संवाद जारी रखता है ताकि जनांदोलन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में उनको अपने पक्ष में शामिल कर सके। उदाहरणस्वरूप, दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद विरोधी

आंदोलन के दौरान व्यापक रूप से प्रतिपक्षियों से सुलह वार्तायें आयोजित की गई जिससे परिवर्तन के लिये एक राष्ट्रव्यापी अवसरों का निर्माण हुआ और पूर्व में पक्षपाती सरकार के साथ खड़े गोरे प्रतिद्वंदी भी अंततः आंदोलन में शामिल हो गये।

अहिंसात्मक आंदोलनों में शामिल लोगों को अक्सर अपने गतिविधियों के संबंध में जटिल निर्णय करने होते हैं। इस दृष्टि से रणनीतिक नियोजन बेहद महत्वपूर्ण है। प्रतिपक्षियों द्वारा किये गये अनैतिक कृत्यों की परवाह किये बिना, गुणदोष के आधार पर रणनीतिक निर्णय अपरिहार्य होते हैं। दमन पर काबू पाने के लिये तात्कालिक और स्वतःस्फूर्त निर्णय लेने होते हैं ताकि दमनकारी अपनी रणनीति पूरी तरह क्रियान्वित न कर सके। इसके साथ ही अहिंसात्मक आंदोलन एक स्पष्ट लक्ष्य और लक्ष्याधारित व्यवस्थित रणनीति को जनसहयोग से संचालित करते हुये पूरी शक्ति आंदोलन में झोंक देने के लिये लोगों को प्रेरित करता है।

कार्यनीति का निर्धारण करते और उसके विभिन्न चरणों का रणनीतिक नियोजन करते हुये - एक ऐसे परिवर्तन का प्रस्ताव जो लोगों को प्रेरित करने वाला और उनकी भावनाओं के अनुकूल हो, आंदोलन की सफलता के लिये ज़रूरी होता है। इसके आगे अल्प, मध्यम और दीर्घकालीन उद्द्येश्यों के अनुरूप व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर की रणनीतियों का निर्धारण और उसके अनुसार ही संवाद के दायरों को तय करना महत्वपूर्ण होता है। इन सबकी दिशा एक ऐसे व्यापक गठबंधन का निर्माण होना चाहिये जो रचनात्मक रणनीति के द्वारा अहिंसात्मक आंदोलन को तैयार कर सके। ऐसा करने के लिये परिस्थितियों का समग्र विश्लेषण, अहिंसात्मक आंदोलनों के निर्धारण में बेहद ज़रूरी है। व्यवस्थित नियोजन के लिये औपचारिक तथा अनौपचारिक तरीके से सूचनाओं और जानकारियों का संग्रहण, ज़मीनी लोगों की बातों को ध्यान से सुनना साथ ही अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थियों सतत विश्लेषण, संभावित निर्णयों के लिये बेहद महत्वपूर्ण होता है।

अंततः वही रणनीतिक नियोजन सफल होता है जो एक अनुशासित तरीके से क्रियान्वित किया जाये। अहिंसात्मक आंदोलन में अनुशासन के लिये सबसे बड़ा खतरा किसी आंदोलनकारी का हिंसक हो जाना है। इसीलिये अहिंसात्मक अनुशासन के तहत आंदोलन के भागीदार प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी भड़काऊ परिस्थिति में भी अहिंसक बने रहने का गुण सबसे अहम है। इसके व्यावहारिक कारण हैं। आंदोलन के किसी व्यक्ति द्वारा की गयी हिंसा वास्तव में उस आंदोलन की जवाबदेही पर ही प्रश्नचिन्ह लगाता है, जो प्रतिपक्ष को दमन करने की छूट दे देता है। इसके अलावा, यदि आंदोलन लगातार अहिंसक रुख बनाये रखता है तो वह व्यापक रूप से सभी संभावित सहयोगियों को जोड़ सकता है, एक हद तक प्रतिद्वंदियों को भी।

इन तथ्यों की सूक्ष्मता से तलाश की जाये तो पूरी पुस्तकें लिखी जा सकती हैं और अहिंसात्मक प्रतिरोधों के गुणात्मक पहलुओं पर व्यवस्थित अध्ययन भी शुरू हो सकता है। हरेक आंदोलन की घटनाओं के विवेचन से

हमारी सामूहिक समझ और ज्ञान को पुख़्ता होगी । शोध और लेखन के क्षेत्र में अभी भी इस तरह के राजनैतिक और सामाजिक कार्यों के कला और विज्ञान को दर्ज़ और विकसित किया जाना बाकी है।

एकता, नियोजन और अनुशासन वास्तव में समयकाल से परे हैं जो आंदोलनकारियों और सहयोगियों के संबंध में एक सामान्य सूचना देते हैं। जिससे आंदोलन को अध्ययन करने वाले और रिपोर्ट करने वाले को आंदोलन की अवस्था ज्ञात हो जाती है। लेकिन क्या यही अंतिम निष्कर्ष है ? क्या आंदोलन की कोई योजना भी थी ? क्या आंदोलन का कोई अनुशासन भी रहा ? एकता, नियोजन और अनुशासन के सिद्धांतों को लेकर जिन लोगों ने अहिंसात्मक आंदोलन किया वे एक शांति और न्यायप्रिय दुनिया के निर्माण की ओर कदम बढ़ा चुके हैं। भविष्य को वही लोग आकार दे सकते हैं जो यह अभियान जारी रखे हैं।

----

1. इस आलेख के लिये मैं सफल आंदोलन उन्हें मानता हूँ जो किसी उद्देश्य को हासिल कर सके और असफल आंदोलन वे रहे जो अपने ही निर्धारित उद्देश्य को नहीं पा सके। इस परिभाषा में एक सामयिक तत्व भी है। एक सफल आंदोलन अपने कहे हुये उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है (जैसे वर्ष 2004 में उक्रेन में हुआ नारंगी आंदोलन) लेकिन बाद के वर्षों में आंदोलन की सफलता, स्वधर्म का त्याग करते ही सवालों से घिर जाती है (उक्रेन के संबंध में और अधिक जानकारी के लिये ओलेना त्रिगाब और ओक्साना शोलयार द्वारा 17 नवम्बर 2010 को Open Democracy में लिखित आलेख 'लोगों की जीत के बाद का संघर्ष' पढ़िये) । इसके विपरीत एक ऐसा आंदोलन जो अपने कहे हुये उद्देश्यों को पाने में विफल रहा (जैसे 1989 में चीन मे जनतंत्र के लिये हुआ आंदोलन) । किन्तु बाद के वर्षों में एक अनुषांगिक प्रभाव जारी रहा जिसने आंदोलन के उद्देश्य को निःसंदेह आगे बढ़ाया। (अधिक जानकारी के लिये Open Democracy में लेस्टर कुर्ट्ज़ द्वारा 17 नवम्बर 2010 को लिखे आलेख 'चीन में दमन के विरोधाभास' को पढ़ें) । दोनों ही महत्वपूर्ण आलेख हमें बताते हैं कि किसी विशिष्ट आंदोलन के 'सफल' अथवा 'असफल' के वर्गीकरण से आगे ध्यान देने लायक उसका उत्तरवर्ती कालखंड है जिसका आंदोलन से अभिन्न संबंध होता है।

अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद : रमेश शर्मा